IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, March 2024

आधुनिक गद्य एवं काव्य साहित्य में सांस्कृतिक मूल्य

डॉ. कमल किशोर यादव
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी
शासकीय छत्रसाल महाविद्यालय, पिछोर, जिला शिवपुरी, म.प्र.
kamalkishory85@gmail.com

शोध सार

साहित्य एवं संस्कृति का अन्योन्याश्रित संबंध है तथा साहित्य एवं संस्कृति दोनों ही मूल्यों को संरक्षित करने का कार्य करते हैं। आधुनिक साहित्य में सांस्कृतिक मूल्यों की दृश्टि से सांस्कृतिक पुनर्जारण की अति महत्वपूर्ण भूमिका रही है जिसमें समाज सुधार की भावना का विशिष्ट विकास हुआ है।[1] इस सामाजिक सांस्कृतिक चेतना से राष्ट्र प्रेम एव स्वातंत्र्य मूल्यों की प्रतिस्थापना को बल मिला। ब्रह्म समाज, आर्य समाज, प्रार्थना समाज, स्वामी रामकृष्ण मिशन इत्यादि सुधारवादी सभी समाजों ने पुरामूल्यों (वैदिक मूल्यों) की पुन व्याख्या प्रस्तुत कर उनके स्वीकरण की प्रेरणा को बल दिया। दूसरी ओर डार्विन सदृश विद्वानों के विकासवादी सिद्धांतों ने ईश्वर की सत्ता पर संदेह का बीज वपन कर दिया था। अतः आस्था और अनास्था के मध्य सांस्कृतिक मूल्य डवांडोल होने लगे थे। बाहर से शांत व व्यवस्थित परिलक्षित होने वाले इस युग के अंतःकरण में बेचेनी, तनाव, कुंठा, क्षोभ, अनिश्चितता की बलवती धाराएं भी सक्रिय थी, ठीक कास्य प्रदेश की अतः सलिला की भांति। उभय आंदोलनों ने बीसवीं सदी को प्रभावित किया, सांस्कृतिक मूल्यों का पारिस्परिक संघर्श जारी रहा[2] फिर भी इस युग में सांस्कृतिक मूल्य एक सीमा तक व्यवस्थित होने लगे हैं। इसलिए इसे संशोधन और व्यवस्था का युग कहा जा सकता है।[3]

पाश्चात्य एवं भारतीय विचार सरणियों से प्रभावित होकर आधुनिक विचारकों ने गंभीरता से सांस्कृतिक मूल्यों पर चिंतन किया। ये विद्वान भी मूल्यों को व्यक्ति, समाज और संस्कृति के त्रिकोण से अलग मानकर नहीं चल सके। यह बात अलग है कि मान्यताऐं बदल गई हैं। यह संसार ही परिवर्तनशील है। व्यक्ति बदला है समाज बदला है, फिर मूल्य क्यों नहीं बदलेंगे? नये जीवनदर्शन की पृष्ठ भूमि पर सांस्कृतिक लक्ष्यों का निर्धारण होता है। वस्तुत मूल्यों से मान्यताऐं हैं जिन्हें मार्गदर्शक ज्योति मानकर सभ्यता चलती रही और जिसकी उपेक्षा करने वालों को परंपरा, अनैतिक, उच्छृंखल या बागी कहती है। किन्तु कभी–कभी ऐसा भी होता है पुराने मूल्यों को मिटाकर उनकी जगह नये मूल्यों की प्रतिष्ठा करने वाले व्यक्ति भगवान बन जाते हैं।[4]

राम और कृष्ण अपने समय के ऐसे ही भगवान थे। आधुनिक युग में महात्मा बुद्ध महात्मा गांधी आदि ऐसे ही महापुरूष हैं, जिन्होंने परिवर्तित परिस्थितियों में एक नवीन जीवन दर्शन प्रस्तुत कर नये मूल्यों की ओर इंगित किया है। व्यक्ति के विचार जब समाज के विचार बन जाते हैं तब सामाजिक मूल्यों की चर्चा होने लगती है। परंतु व्यक्ति एक महत्तर मानव समाज का परिवार, नगर, प्रदेश, प्रांत, राष्ट्र या संसार का सदस्य नागरिक सामाजिक विशेष होकर सामान्य अंग भी है। अतः उसके विचार कर्म और कल्पना में मूल्य का प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। इन सब विविध मूल्यों (संघर्श) के बाद भी एक बड़ा मूल्य बचा रहता है, जो एक प्रकार से इन सबका सार है वह है सांस्कृतिक मूल्य। अंततः वे व्यक्ति मूल्य ही प्रधान हैं, जो समाज मूल्य के विरोधी न होकर उसके पोशक हों वे ही सच्चे सांस्कृतिक मूल्य हैं।

मुख्य शब्द– सांस्कृतिक, मूल्य, आधुनिक, काव्य, साहित्य, समाज, भारतीयता, आधुनिक कवि आदि।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, March 2024

संदर्भ सूची

[1] मॉडर्न रिलीजियस मूवमेंट इन इण्डिया, पृ. 387

[2] रिनेसेंट इण्डिया, पृ. 27–28

[3] आधुनिक साहित्यः व्यक्तिवादी भूमिका, पृ. 113

[4] साहित्यमुखीः दिनकर, पृ. 56

[5] साहित्य कोश, भाग 2, प्रभाकर माचवे, पृ. 0659

[6] धर्मयुग, 7 सितम्बर, 1969 पृ. 12

[7] भारतेन्द्र का गद्य साहित्य समाजशास्त्रीय अध्ययन डॉ. कपिलदेव दुबे, पृ. 142

[8] भारत भारती, पृ. 117

[9] साकेत (एकादश सर्ग) पृ. 437

[10] आधुनिक कवि भाग 6 पृश्ठ 1

[11] उर्मिला, (सर्ग–तीन) नवीन, पृ. 339

[12] हुंकार, दिनकर–भूमिका (क्रांति का कवि)

[13] वही, पृ. 23

[14] युगवाणी (बापू) पंत ग्रंथावली भाग 2 पृ. 81

14 परिमल (भिक्षुक) पृ. 103 राजकमल प्रकाशन दिल्ली दि. 1978

15 परिमल विधवा पृ. 98

16 अज्ञेय–सॉप (इन्द्रधनु रौंदे हुए ये)

17 निबंधकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल– डॉ. लालता प्रसाद सक्सेना, निर्मल प्रकाशन जयपुर, संस्करण 1973, पृ.